IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव का अध्ययन

निर्देशिका

श्रीमती तृप्ति सैनी

व्याख्याता

प्रस्तुतकर्त्री

अर्चना चौधरी

एम.एड.छात्रा

सारांश –

बालक पत्रिकाओं का उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में भाषागत व रचनात्मकता का प्रभाव पड़ता है। छात्र व छात्राओं में रोचकता व भाषागत अध्ययन में कुछ खास अंतर नहीं है। परन्तु रचनात्मकता में छात्राओं को अधिक रूचि है। यही रूचि छात्रों को भी हो इसके लिए उन्हें प्रेरित किया जाए। इसके लिए आवष्यक है कि समय–समय पर बच्चों की बाल पत्रिकाओं को पढ़ने व उससे कुछ नया सीखने को अभिप्रेरित अध्यापक व अभिभावक दोनों को ध्यानपूर्वक करवाना चाहिए तथा बाल भास्कर की विषय सामग्री की ओर अधिक रूचिकर करें जिससे विद्यार्थियों को उसके पढ़ने में रूचि बनी रहें।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है और आंकड़ों के संग्रहण हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया है। न्यादर्श के रूप में जयपुर शहर के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है इसके साथ ही 2 समाचार बाल पत्रिकाओं का भी चयन किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं के प्रभाव के अध्ययन में सार्थक अंतर पाया गया है।

प्रस्तावना –

आधुनिक युग में निरन्तर नई–नई घटनायें घटती रहती है और बड़ी तेजी से घटती है। सूचनाएं आधुनिक मनुष्य के लिए ज्ञान का स्त्रोत ही नहीं शक्ति का ही स्त्रोत है। इसलिए अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं की सुचना प्राप्त करना आधुनिक मनुष्य की एक अनिवार्य जरूरत बन गई है। ऐसी स्थिति में जनसंचार का अत्यधिक महत्व है। जन संचार शब्द जन+संचार शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ होता है – जनता तक संदेष या सूचना पहुँचाना। सम्प्रेषण की सम्पूर्ण प्रक्रिया जनसंचार है, जिसके द्वारा मानव अपने विचारों और मंतव्यों का आदान–प्रदान करता हैं मनुष्य के विकास के साथ–साथ जनसंचार माध्यमों का भी विकास हुआ। जनसंचार माध्यमों का तो भागों परम्परागत व आधुनिक माध्यम में बांटा जाता है।

परम्परागत माध्यम में जन समाज तक पहुँचाने के लिए समाचार–पत्रों के साथ–साथ साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक और वार्षिक पत्र–पत्रिकाओं भी प्रकाशित होती है। इसके अतिरिक्त विज्ञापन, पोस्टर, पप्लेट, बैनर आदि भी मुद्रण संचार माध्यम के उपयोगी साधन माने जाते है।

समस्या का औचित्य –

कोई भी अनुसंधान कार्य करने वे पूर्व एक समस्या का चयन आवष्यक होता है। यह समस्या किसी भी व्यक्ति या समूह से संबंधित हो सकती है। जब अनुसंधानकर्ता उस समस्या का चयन करता है तो उसका कोई उद्देष्य अथवा लक्ष्य होते है। उस समस्या को चुनने का र्को औचित्य अवश्य होता है।

जिस किसी भी समस्या को अनुसंधानकर्ता चुनता है। यह शैक्षिक, सामाजिक, जागरूकता व वर्तमान समस्या पर आधारित होनी चाहिए।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

हिन्दी समाचार पत्र –

समाचार पत्र या अखबार, समाचारों पर आधारित एक प्रकाशन है, जिसमें सामयिक घटनायें, राजनीति, खेल–कूद, व्यक्तित्व, विज्ञापन इत्यादि जानकारियाँ सस्ते कागज पर छपी होती है।

बाल पत्रिकाएँ –

बाल पत्रिकाओं से तात्पर्य बाल मनोविज्ञान के आधार पर यह है कि सुरूचिपूर्ण तरीके से ज्ञानवर्धन साग्री को बच्चों के सामने पेश करना है। इनका उद्देश्य ही होता है कि बच्चों को बच्चों के स्तर पर जाकर सीखना या सीखने के लिए प्रेरित करना।

उच्च प्राथमिक स्तर –

ऐसे विद्यालय जिनसे कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों को शिक्षण कराया जाता है। उन्हें उच्च प्राथमिक विद्यालय कहते है।

शोध के उद्देश्य –

1 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाएँ की रोचकता के प्रभाव का अध्ययन करना।

2 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं की सामग्री का भाषागत रूप से अध्ययन करना।

3 उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

,

शोध की विधि –

किसी भी शोध कार्य को पूरा करने के लिए शोधार्थी का प्रमुख उद्देश्य समस्या का हल ढूंढना है। वर्तमान समय में शोध कार्य हेतु अनेक शोध विधियों का अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।

जनसंख्या –

प्रस्तुत अध्ययन में जयपुर जिले के दो सरकारी विद्यालयों के छात्र व छात्राओं को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य उच्च प्राथमिक स्तर के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण –

शोधकर्त्री द्वारा उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत शोध कार्य में सांख्यिकी के रूप में प्रतिशत का प्रयोग किया गया है।

शोध का परीसीमांकन –

1 क्षेत्र – यह अध्ययन जयपुर क्षेत्र के ग्रामीण क्षेत्र तक ही सीमित किया गया है।

2 स्तर – यह अध्ययन केवल उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है।

3 लिंग – यह अध्ययन छात्र–छात्राओं दोनों पर किया गया है।

4 न्यादर्श – इस अध्ययन के लिए 100 विद्यार्थियों का चयन न्यादर्श के रूप में कर अध्ययन उन तक सीमित किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण –

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल–पत्रिकाओं से रचनात्मकता का बच्चों पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन।

क्र.सं.	समूह (श्रेणी)	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1.	सरकारी विद्यालय की छात्राएं	50	85.6%
2.	सरकारी विद्यालय के छात्र	50	79.8%

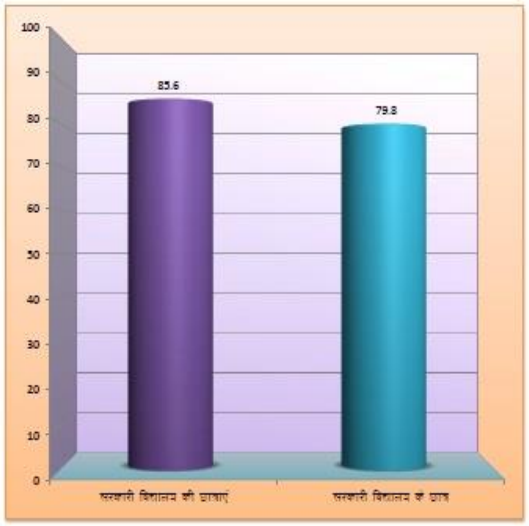

उपर्युक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बाल–पत्रिकाओं से रचनात्मकता के संदर्भ में उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों, जिनमें छात्राओं का प्रतिशत 85.6 प्रतिशत तथा छात्रों का प्रतिशत 79.8 प्रतिशत है। ये आंकड़ें ये बताते है कि बाल–पत्रिकाओं से रचनात्मकता का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। बच्चों में कुछ नया करने के गुणों का विकास होता है। इसमें छात्राओं का प्रतिशत छात्रों की अपेक्षा अधिक है। इससे स्पष्ट होता है कि छात्राओं का रूधान रचनात्मकता की ओर अधिक है। वे बाल–पत्रिकाओं से नयी–नयी वस्तुओं को बनाने व सीखने में अधिक रूचि लेती है।

शोध निष्कर्ष –

1. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाएँ की रोचकता के प्रभाव का अध्ययन सार्थक हुआ है।
2. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं की सामग्री का भाषागत रूप से अध्ययन सार्थक हुआ है।
3. उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर हिन्दी समाचार पत्रों में संलग्न बाल पत्रिकाओं द्वारा विद्यार्थियों की रचनात्मकता पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन सार्थक हुआ है।

शैक्षिक निहितार्थ –

- **समाचार संपादकों के लिए –**

  समाचार पत्र व बाल पत्रिकाओं के सम्पादकों को चाहिए कि वो बाल पत्रिकाओं में प्रकाशित होने वाली विषय सामग्री को पूर्व में पूरी जाँच करें जो कि बाल पत्रिकाओं में आने वाली कहानियों, कविताओं, अंतर खोजें, अग्रेजी व हिन्दी वर्तनी, पहेलियों को बच्चों के सामने ऐसे प्रकट करें कि उनका बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव रहें।

- **शिक्षकों के लिए –**

  प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो के आधार पर शिक्षक बालकों को ऐसी बाल पत्रिकाएं पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें जो विद्यार्थियों के संवेग को श्रेष्ठ बनाने की दृष्टि से उपयोगी हो।

- **अभिभावकों के लिए –**

  बालकों का सबसे अधिक समय अपने अभिभावकों के बीच ही गुजरता है और उनके माता–पिता व परिवारगण ही बालकों के सबसे अधिक नजदीक होते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. अग्रवाल नीतू (2007) : शैक्षिक सांख्यिकी, राधा प्रकाशन मंदिर, आगरा।
2. अग्निहोत्री, रविन्द्र (2008) : आधुनिक भारतीय शिक्षा समस्याएँ एवं समाधान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3. आहूजा, राम (2008) : सामाजिक समस्याएँ, रावत पब्लिकेशन, जयपुर
4. बैस, डॉ. नरेन्द्र सिंह (2006) : शैक्षिक एवं उदीय मान भारतीय समाज, जैन प्रकाशन मंदिर, जयपुर
5. राजस्थान पत्रिका समाचार पत्र 7 जनवरी, 2018
6. भारतीय वैज्ञानिक औद्योगिक अनुसंधान पत्रिका अभिगमन तिथि जून, 2017
7. इण्डियन जर्नल्स ऑफ मेडिकल रिसर्च, सितम्बर 2014
8. दैनिक समाचार पत्र 11 जनवरी 2048
9. नव समाचार पत्र हरियाणा, दिसम्बर 2016
10. www.bekonomike.com
11. www.sildeshare.net
12. www.financialwing.com
13. https://ebanking-ch.ubs.com